Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ25839

गुजरात के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

राठौड वनराजसिह रावजी भाई
शिक्षा विभाग माधव विश्वविद्यालय पिंडवाडा, जिला सिरोही (राज.)
डॉ सतेन्द्र कुमार- सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग माधव विश्वविद्यालय पिंडवाडा, जिला सिरोही (राज.)

Article Info
Volume 8, Issue 2
Page Number : 74-79

Publication Issue :
March-April-2025

Article History
Accepted : 05 April 2025
Published : 20 April 2025

सारांश :

शिक्षा एक व्यक्ति को अपनी क्षमता का पता लगाने में मदद करती है, जो बदले में एक मजबूत और एकजुट समाज को बढ़ावा देती है। इसका उपयोग करने से इनकार करना किसी भी व्यक्ति को एक पूर्ण इंसान बनने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। परिवार, समुदाय और राज्य को बड़े स्तर पर ले जाने के लिए मानव समाज के हर स्तर पर शिक्षा का महत्व बहुत आवश्यक है।

शिक्षा आजीवन चलने वाली सचेतन एवं प्राणमयी प्रक्रिया है। जन्म लेने के पश्चात् ही व्यक्ति अनेक परिस्थितियों का सामना करता है और विकासोन्मुख होता हुआ आगे बढ़ता रहता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में वह अनुभव ग्रहण करता है इस अनुभव को ग्रहण करने में ही शिक्षा निहित है इसे परिभाषित करते हुए प्रो. अदावल सुबोध ने कहा है कि, "शिक्षा वह सविचार प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों में परिवर्तन एवं परिवर्धन होता है उसके स्वयं तथा समाज के कल्याण के लिए।" इस प्रकार की शिक्षा की परिकल्पना अत्यन्त व्यापक अर्थ में की गयी है जहां तक औपचारिक शिक्षा का सम्बन्ध है उसका सशक्त व सबल माध्यम है- शिक्षण। शिक्षण, शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम के मध्य चलने वाली वह प्रक्रिया है जिससे बालक की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक विकास होता है जिससे कि बालक समाज का उपयोगी नागरिक बन सके ।

1.प्रस्तावना :

शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक शिक्षा प्राप्त करता है और यह प्रक्रिया पूर्ण जीवन चलती रहती है। घरेलू सामाजिक परिस्थिति को घरेलू वातावरण कहते हैं। परन्तु वातावरण से अभिप्राय मानव निर्मित मनो सामाजिक वातावरण से है. जो परिवार के समस्त सदस्यों को अपनी परिधि में ढके हुए होता है। खासतौर पर बालक के विकास के परिप्रेक्ष्य में इसका आशय घर के उस मनो सामाजिक वातावरण से है, जो बच्चों द्वारा

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

प्रत्यक्षीकरण किया जाता है. जिसमें बालक का व्यक्तित्व प्रभावित होता है। कोई बालक जब परिवार में जन्म लेता है तो तत्काल वह कुछ नहीं कर पाता है। परिवार के सदस्य उसका पालन-पोषण करते हैं, उसकी सेवा-सुश्रुषा करते है, परिवार में उसका विकास होता है, काफी दिनों तक यह असहाय रहता है. अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों पर आश्रित रहता है।

बच्चा परिवार से कुछ करने का सीख लेता है। बच्चे की माँ ही बच्चे की प्रथम शिक्षिका होती है। यही बच्चों में सर्व प्रथम भाषा ज्ञान के प्रति लगाव पैदा करती है। इसके साथ-साथ धीरे-धीरे बच्चे में शिक्षा के प्रति लगाव उत्पन्न हो जाता है। यह निर्भर करता है. माँ कितनी जागरूक है शिक्षा के प्रति माँ जागरूक है तो अपने बच्चें में बचपन से ही बच्चे में विद्यालय जाने के लिए प्रेरणा देगी और प्रारम्भ में स्वतः विद्यालय के प्रति लगाय बच्चें में बचपन से उत्पन्न होगा। बच्चे में माता-पिता व परिवार के प्रति प्रेम की प्रगाड़ता बढ़ेगी।

पारिवारिक वातावरण में माता-पिता अपने बच्चे को पर्याप्त समय देते हैं इसके साथ-साथ परिवार के अन्य सदस्य भी बच्चों को प्रेम प्रदान करते है जो अनेक शैक्षिक अभिरूचि के साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है। स्नेह, प्रेम, सौहार्द के अलावा बालक की अन्य आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना और उसकी समय-समय पर पूर्ति करना अनिवार्य है क्योंकि उसके समुचित विकास के लिए परिवार में भावनात्मक वातावरण का निर्माण एवं सुरक्षा दोनों आवश्यक है। जिस परिवार के बच्चे को घर में समय-समय पर स्नेह मिलता रहता है उस घर के बालक का मावात्मक विकास भी अपेक्षाकृत अधिक अच्छा होता है और ऐसे घर के बालक अधिक भावात्मक सुरक्षा का अनुभव करते है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि परिवार व घर का वातावरण मी बालक के शिक्षा-दीक्षा को प्रभावित करता है। परिवार के सदस्य बालक को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करते रहते हैं। मध्यम वर्ग के लोग बालक-बालिकाओं की शिक्षा के लिए सबसे अधिक त्याग करते है। अनुसंधानों से पता चलता है कि घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में उच्च धनात्मक सम्बन्ध है घरेलू वातावरण में अध्ययन सम्बन्धों प्रेरणा से बालक के ज्ञान में वृद्धि होती है। उसका मानसिक विकास होता है।

सीखने-सिखाने की सप्रयोजन युक्त सतत् प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है। शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियाँ का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है. जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होता है।

शिक्षा का उद्देश्य है ज्ञान में वृद्धि के द्वारा व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना जिसके जिसके फलस्वरूप बालक को जीवन में सफलता मिलती है। शिक्षा की प्रक्रिया के अन्तर्गत सभी स्तरों पर शिक्षा उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। और इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विभिन्न शिक्षण प्रक्रियाओं का आयोजन किया जाता है। इन्हीं शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति ही शैक्षिक अभिरूचि कहलाती है। इस शैक्षिक अभिरूचि को अनेक कारक प्रभावित करते है जिसके कारण भिन्न-भिन्न बालकों की शैक्षिक अभिरूचियों भिन्न-भिन्न होती है। किन कारणों से शैक्षिक अभिरूचि कम होती है। यदि यह तथ्य ज्ञात हो जाये तो अभिरूधि के निषेधात्मक कारणों को घटाया जा सकता है। शैक्षिक अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारकों में घरेलू वातावरण एक महत्त्वपूर्ण कारक है। घरेलू वातावरण का शैक्षिक अभिरूचि पर प्रभाव का ज्ञान हो जाने पर घरेलू वातावरण को अधिक अनुकूल कर बालक की शैक्षिक रूचि को बढ़ाया जा सकता है। और शिक्षण उद्देश्यों को उच्च सीमा तक प्राप्त किया जा सकता है इससे स्पष्ट है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। अतः इस अध्ययन को आवश्यकता निर्विवाद रूप से है।

2. साहित्य का पुनरवलोकन :

पूर्व के शोध अध्ययन के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अग्रवाल (1986), मेनन, जी०एस० (1992), पाण्डेय, एस०के० (1992). विलर, एण्ड सौलमन (1993), अग्रवाल और कपूर (1998), चंग के० डी० (2001), एस० रानी एवं अन्य (2005), अरडन तथा अन्य (2007), बाजपेयी, वीप्ति (2009), त्रिपाठी, कुमुद (2011), निगम, प्रतिमा (2011), ने पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों पर सृजनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, शैक्षिक रूचियों एवं विद्यालयी अभिवृत्तियों, उपलब्धि प्रेरणा का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, सामाजिक दबाव और विद्यालयी उपलब्धि का अध्ययन, विभिन्न सामाजिक, आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि तथा विद्यालयी अभिवृत्ति का अध्ययन, निष्पत्ति पर प्रभाव, उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव, शैक्षिक क्रिया कलाप में अभिभावकों की सहभागिता, शैक्षिक उपलब्धि पर माता-पिता के प्रभाव का अध्ययन, विद्यार्थियों की विद्यालयी निष्पत्ति, वातावरण तथा व्यक्तित्व पर प्रभाव, शैक्षिक उपलब्धि और योग्यता, मातृ-पितृ प्रोत्साहन और आत्मबोध का अध्ययन, पिता की अनुपस्थित और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर प्रभाव इत्यादि का अध्ययन किया है एवं अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि घरेलू वातावरण विद्यार्थियों से जुड़े चरों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। जहाँ तक छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण के पड़ने वाले प्रभावों का सम्बन्ध है, पर अनेक अध्ययन हुये है। पर सभी शोध अध्ययनों की गम्भीरतापूर्वक अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि बहुत कम शोधकर्ता ने अभी तक घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन बहुत कम हुआ है एवं घरेलू वातावरण का शैक्षिक अभिरूचि पर क्या, कैसे व कितना प्रभाव पड़ता है. व प्रत्येक का शैक्षिक अभिरूचि के मध्य कोई सहसम्बन्ध है अथवा नहीं, का अध्ययन नहीं किया गया है। घरेलू वातावरण का उसके प्रत्येक आयामों का शैक्षिक अभिरूचि पर क्या प्रभाव पड़ता है, या प्रत्येक का शैक्षिक अभिरूचि से कैसे सहसम्बन्धित है. यह शोधकर्ती के जिज्ञासा का विषय हो गया है। इस जिज्ञासा की संतुष्टि हेतु अपने अध्ययन में प्रस्तुत समस्या का चयन किया।

3. अध्ययन का उद्देश्य :

किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है

- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन करना।

4. परिकल्पनाएँ :

अध्ययन को निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गयी है-

1. गुजरात के माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।
2. गुजरात के माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।
3. गुजरात के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।
4. गुजरात के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध है।

5. शोध विधि :

प्रस्तुत समस्या के आधार पर वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5.1 जनसंख्या एवं न्यादर्श-

प्रस्तुत अध्ययन में गुजरात के खेड़ा जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक रूचि में सहसम्बन्ध को जानने के लिए उद्देश्यपरक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया है। इस चयन के लिए अध्ययनरत् ने माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर कक्षा 9 एवं 10 के 500 छात्र-छात्राओं का चयन यादृच्छिक द्वारा किया गया है।

5.2 प्रयुक्त उपकरण-

डॉ. करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित घरेलू वातावरण अनुसूची एवं प्रस्तुत शैक्षिक रूचि प्रपत्र डा० काजी गौस आलम एवं डॉ. रामजी श्रीवास्तव द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

6.सांख्यिकी विधि-

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए सहसम्बन्ध गुणांक आघूर्ण सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

6.1 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी

माध्यमिक स्तर के छात्रों के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

समूह	N	सह-सबंध गुणक गुणक गुणक (R)
छात्र	50	0.328

व्याख्या-

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई जिससे त का मान 0.328 प्राप्त हुआ जो कि 48 स्वतन्त्रांश (का) के लिए 05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.273 से अधिक है अर्थात् अन्तर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य सहसम्बन्ध होता है अर्थात कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिरूचि पर घरेलू वातावरण एक-दूसरे से सम्बन्धित है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि का सहसम्बन्धात्मक अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित है-

- गुजरात के माध्यमिक स्तर के शहरी छात्रों के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- गुजरात के माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्रओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- गुजरात के माध्यमिक स्तर की शहरी छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
- गुजरात के माध्यमिक स्तर की ग्रामीण छात्राओं के घरेलू वातावरण एवं शैक्षिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सुझाव:

बच्चों को उचित पालन-पोषण, देखभाल, आवश्यक विशेष सुविधाओं को उपलब्ध करके, उन्हें विचार अभिव्यक्ति, मौलिक गुणों के प्रदर्शन का स्वतन्त्र अवसर देकर उनकी आवश्यकताओं भावनाओं एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उनको उचित दिशा में मार्गदर्शन करके मित्रवत् भावात्मक लगाव रखकर उनकी शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से बढ़ाया जा सकता है। घर में शान्ति, सहयोग, प्रसन्नता, लोकतांत्रिकता, स्वतंत्रता, भागीदारी आदि को महत्त्व देकर घर के वातावरण को अनुकूल बनाया जा सकता है। वस्तुतः घरेलू वातावरण के निर्माण के लिए घर के वरिष्ठ सदस्य ही सर्वाधिक जिम्मेदार होते है। यदि वे घर के छोटे सदस्यों से प्यार से पेश आये, छोटों की भावनाओं को ध्यान में रखें, निर्णय लेने के पहले घर की महिलाओं तथा छोटे सदस्यों की भी राय लें तथा उनकी बातों पर गौर करें, तो घर का वातावरण सुखद और आनन्दमय हो जाय। उनके कार्यों तथा विचारों का प्रभाव छोटे सदस्यों पर भी पड़ेगा जिससे उनमें

भी अच्छे विचार, संस्कार रूप में सुस्थापित हो जायेंगे और घर का वातावरण अनुकूल हो जाएगा जिससे समाज का वातावरण भी अनुकूल होगा और मानव समाज विकास के मार्ग पर तेजी से अग्रसर हो सकेगा।

संदर्भ :

[1]. Agarwal J.C. (2002) 'Educational Research' Aryan Book Depot. Agra.

[2]. Asha J. V. (2001) " A study of the effcacy of the Instrucation Pedagogy of English Based on Ausubel and bruners models for B.Ed student" south Gujarat University Surat

[3]. Bandura (1977). Self-efficacy: Toward A Unifying Theory of Behavioural Change. Psychological Review, 84, 191-245.

[4]. Bandura (1978). The Self-system in Reciprocal Determinism. American Psychologist, 33, pp. 348-358.

[5]. Chauhan, S.S. (1999) "Advanced Educational Psychology' Vilas Publishing House Pvt. Ltd, New Delhi.

[6]. Denscombe, Martyn (1999) 'The good Research guide' Viva Books Pvt. Ltd., New Delhi.

[7]. Eve Justina Romold (2006) A Study on 6 Development of an enneagram Educational programme for enhancing Emotional intelligence of student teachers - Madurai, University.